था मंदिर है मधुशाला

सुमन-लता

प्रकाशक :

प्रगतिशील लेखक सघ, चूरू
(राष्ट्रीय प्रगतिशील लेखक महासघ से सबद्ध)

प्रथम सस्करण
1985 ई०

मूल्य - 20 रुपये

आवरण - सुशील आर० के० कौशिक

मुद्रक - साखला प्रिन्टर्स, बीकानेर

श्रद्धावनत ये भावना, मेरे पिताश्री तक पहुचे,
दृग बद कर युग जोड़कर, मै हृदय समर्पित कर रही हूं,
स्मृतियो को बांधकर, कुछ भाव अर्पित कर रही हू।

स्व. पिताश्री रूपचन्द शर्मा को सादर समर्पित

अनुक्रम

स्वागतम् है स्वागतम्

है निशा अवसान तेरा,
दिवस को आह्वान मेरा,
आरती आदित्य की कर,
धूप को प्रणाम मेरा,
गूजता है विश्व सारा ...

नव सुमन सब खिल चुके है,
भ्रमर, उपवन मिल चुके है,
तुषारकण अब वाष्प बनकर,
बादलो मे मिल चुके हैं,
पल्लवो नव अकुरों का....

अबुधि तेरी लहर का,
आ रहे हर नव प्रहर का
उड़ते औ उमड़ते प्रभजन,
बुलबुलो संग शान्त तीरों,
नाविको की हर नजर का....

दीप्त आशाओं तुम्हारा,
धन निराशाओ तुम्हारा,
प्राप्य-अप्राप्य सभी का,
सफलता या असफलता का,
मृत्यु जीवन मुक्तियों सग ..

असख्य खग-वन्धुजनो का,
भावमय मानव मनों का,
नीड की नगरी तुम्हारा,
ऐ धरा ! तेरे कणों का,
आ रहे जाते जनो का....

• • •

था मंदिर है मधुशाला

ठहर निकट मदिर के पास,
छोड़ा एक दीर्घ निश्वास,
देखा दर के पार लिखा है, था मदिर, है मधुशाला

शंख बोल, करताल बोलते,
लेकर तान मृदग डोलते,
पर देती है ध्वनि सुनाई, मधु उडेल भरना प्याला।

गाया करते यहा आरती,
जय रघुनदन, जय भारती,
सांध्य यहा, सन्नाटा छाता, आता मद्यप नभ काला।

तिलक लगा उन्नत ललाट पर
चदन से सुरभित कपाट पर,
युगकर भर फैंका करते थे अक्षत, अंगूरी माला।

देवदासिया नर्तन कर-कर,
भक्ति भावनाओ से भर-भर,
कभी अन्न वरदान मागती, आज पिलाती मधुबाला।

श्रद्धायुक्त मनोहर चेहरे,
आंख मूद देवो पर पहरे,
भक्तनो की टोली देती, अब है पहरे मे प्याला।

हस्त अजुली आगे आती,
भरकर के पीछे हट जाती,
लेकिन तब इस पुनीत पात्र मे, था गगाजल है हाला

सुनकर भक्ति गान भक्त जन,
पाते थे अनुपम प्रताप मन,
अब मुशायरे की महफिल है, और झूमती मधुशाला
पहला शेर शायरी होती, था मदिर है मधुशाला।

• • •

करता रहा सिंगार

चीखती चारों दिशाएं,
गिर रही अट्टालिकाएं,
झोपडी धू-धू कर जलती,
सृष्टि के अंतिम पलों सम,
होने लगा संसार,

पर देख दर्पण में कोई, करता रहा सिंगार
सौदामिनी रह-रह चमकती,
गर्जना जलधर मे भरती,
जल मग्न अचला, गिरिवर,
खेत औ खलिहान डूबे,
खो गए बाजार .. ..

जलधि की विस्तृत लहर से,
गगन मण्डल के शहर से,
गमन करते समय सुनाई,
दे रही आवाज उसकी,
तोडते हृदय आधार .. ...

नभ से कई आकर गिरे,
सुन्दर सितारे टूटकर,
सब कुछ बहाकर ले गये,
धरती से सोते फूटकर,
नींव बनाता जग परिवार....

भीड़ है श्मशान मे,
अनहद जनाजे आ रहे,
शर्वरी अंतिम प्रहर तक,
लोग जलते जा रहे,
हर ओर मुर्दों की कतार ...

नेत्र प्रतीक्षाहीन उसके,
पर अधर खिलते कमल से,
अज्ञात कि किस हेतु बैठा,
कर में है पुष्पाहार,
था गहन अंधकार ... ..

• • •

शेष है अंगार

जल रही मधु भट्टियां या,
जल चुकी गृह भट्टियां थी,
दीर्घ आयु हो रही है,
इस हुताशन की तपन

बुझ गई अग्नि की लपटें, शेष है अंगार

खण्डहर ही हो चुका है,
ये किला बेहद पुराना,
कह रहा ससार इसको
लद गया इसका जमाना .

छत गिरी, दर गिर पड़े पर, शेष है दीवार

बीत मन्वन्तर गए है,
यूं झगडते आदमी को,
जातिया और धर्म टूटे,
बाट डाला है जमी को,

खत्म कर डाली घृणाए, शेष है अभिसार. .

निश्चय ही निश्चल देश वाले,
कर रहे सब कर्म काले,
सहकर अत्याचार चुप्प है,
पड गये ओठों पर ताले,

भटक जाते हैं पथिक पर, शेष हैं अंगार ...

बतिया उडती रही है.
आंधियो के आगमन से,
ज्योतियां बुझती रही है,
इस तिमिर के आक्रमण से,

बुझ गए दीपक, शमाएं, है शेष दीपाधार....

प्रकंपन फिर-फिर उठेंगे,
वो लपट फिर-फिर जलेगी,
भस्म हो जाएगा सब कुछ,
व्यर्थ बारुद को करेंगे,

जब राख के नीचे दबे हों, प्रज्वलित अंगार,
बुझ गई अग्नि की लपटें, शेष है अगार....

• • •

विगलित कमल बहा जाता है

टूट गया अपनी डाली से,
उस जीवन देने वाली से,

कल तक खिलता कमल बेचारा, आज यही उपमा पाता है।

सीमाहीन दिखाई देते,
रत्नाकर जलराशि लेते,

तुच्छ कमल की पखुडियो पर, कैसे ध्यान दिया जाता है।

ललचाई नजरो से देखा,
लेकिन टूट गई वो रेखा,

जाती लौट रही तट की इन, लघु नावो से टकराता है।

जलवासी जलहीन दिखाई
देता, करता विश्व बड़ाई,

आज वही दासी स्वरूप, लहर तले कुचला जाता है।

चिंतित था मेरा क्या होगा,
छानबीन की, सम दरोगा,

खिला हुआ सूखा, जब सोचा, वड़वानल बढता जाता है।

हाय ! हाय ! की मंद ध्वनि मे,
भरता गूंज गगन अवनि मे,

सरित कूल पर खडा देखता, मानव दल मुस्का जाता है।

गिरे हुए को पकड़ उठाना,
डूबे, तैर बचाकर लाना,

कहती हुई सभी बातो पर, किससे अमल किया जाता है।

• • •

जब जाग जाऊंगा मैं

अभी तो मुझे नींद है आ रही,
देख लूंगा जब जाग जाऊंगा मैं,
तूं दे गालियां चाहे सोते हुए,
बता दूंगा जब जाग जाऊंगा मैं।

है अब तो मेरे पास रोटी नही
औ तन भी कृषकाय होता हुआ,

मेरे इस कुटुम्ब का हर बधुजन,
सिसकता हुआ है या रोता हुआ,
प्रतिदान चल कल क्षुधाओं सहित
तभी लूंगा जब जाग जाऊंगा मैं।

अभी तो प्रणेताओ करलो मनमानी,
चलाओ मनीषा ये अपनी पुरानी,
नही द्रोह करके अभी मैं कहूंगा,
मगर वक्त आने पे चुप न रहूंगा
यूं ही नीद मे मतदान दे रहा हूं,
देखना जब जाग जाउगा मैं।

अभी इस समाज को करदो खोखला,
कुरीति बनाकर हटादो सभ्यता,
धनो के ही बल पर लो तुम जीवनों को,
पशम ही समझ लो मेरे जीवनों को,
बताऊंगा क्या महत्व है इन सभी का,
देखना जब जाग जाऊगा मैं।

गब्बर और गुरु घंटाल बनकर,
गम्मन करो मेरी विवशता का,
निर्बलता कहकर उपहास करो,
मेरी जिह्वा की जड़ता का,
पर सुना दूंगा हर एक कहानी,
देखना जब जाग जाऊंगा मैं ।

सो रहा हूं मैं रात बीत जाने दो,
अब नव प्रभात आने दो,
लाऊंगा प्रचण्ड परिवर्तन जग में,
देखना जब जाग जाऊंगा मैं ।

• • •

कैदी खुले अलारों के

परम्परा की लगी बेड़िया, बधन यहां सस्कारो के
सच कहते हैं भारतवासी, कैदी खुले अलारों के

वेतनखोर हैं काम चोर,
लाज शर्म सब छोड़ी है,
वार बिताते हसते – हसते,
काम – धाम कुछ करते ना,
प्रतिकारी न हुए हैं पैदा, इन सब भ्रष्टाचारों के .

आज सभी दामन फैलाकर,
लाख दुआए करते हैं,
जिससे ये मत मिल जाएं,
और नेताजी बन जाए,
गिरगिट भी शरमा जाती है, देख रूप सरकारो के .

लाभ कमाना है सेठों को,
काट – काट कर पर पेटों को,
धर्मदास औ, गग नहाए,
धर पापो का जंग चढाए,
काम नहीं करते हैं कोई, बिना बुरे औजारो के

इधर भी देखो, उधर भी देखो,
है हैवान, नही इन्सान,
करुणा तो जानी है किसने,
हमदर्दी से भी अन्जान,
दीख पडेंगे हमें निशां बस, अक्ष मे अम्बुधारों के

एक आत्मा औ, परमात्मा,
फिर भी लाखो धर्म खड़े है,
एक उदर ही भरना सब को,
फिर भी लाखों कर्म पड़े हैं,
पर सब के सब बने हुए हैं, ये कच्चे आधारों के

खोल तेरे अवगुण्ठन को

व्योम सदन में तारक आए,
प्रणय यामिनी ढलती जाए,
आज प्रतीक्षा है बस तेरी,
बैठे तेरे वन्दन को,

देखेंगे हम चन्द्र वदन अब
खोल तेरे अवगुण्ठन को ।

ये भयभीत निगाहे तेरी,
जाने किसको खोज रही है,
ये घबराया चेहरा तेरा,
मेरी आखें देख रही हैं,

असफल करती तेरी सुरभि,
मलयगिरी के चन्दन को ।

है निस्तब्ध फिजां ये सारी,
बोले कौन है तेरी बारी,
सभी यहां वन्दक हैं तेरे
नहीं होगा कोई प्रतिकारी,

शब्दो में परिवर्तित करदे,
इन अधरो के कंपन को ।

तेरे स्वागत अर्थ में मैंने,
धरती – गगन सजाए है,
तेरे दर्शन की खातिर ही
सज्जन सभी बुलाए हैं,

पर अभिसार समझ लेना ना,
आगत के अभिनंदन को ।

स्मित की वर्षा कर दे एक पल,
हम उपकार बहुत मानेंगे,
नत पलकों को आज उठादे,
और नहीं कुछ भी मांगेंगे

एक अमरता का वर देदे,
इस वीणा के गुंजन को।

• • •

चला गया है कारवां

कदम बढ़ें, रुकें नही,
पुकारता है ये समां,
बेकार वक्त ना गवां
चला गया है कारवां....

एतबार मुझ पे कर जरा,
मैं झूठ तो न बोलता,
राहों मे खो तूं जाएगा,
पागल बना यों डोलता,
सूनी मजार है यहा,
जलती नहीं कोई शमा....

निकला मेरे नजदीक से,
गुब्बार छोड़कर यही,
इतना तो वो छोटा नहीं,
कि छुप गया यहीं कही,
नजर नही आया है क्या,
खमोशियों का ये धुंआ....

माना कि तू गमगीन है,
लेकिन किया क्या जाए अब,
तूं ने ही तो तकरार कर,
छोड़ा था सबका साथ तब,
कुछ तेज चाल करके तूं
अब ढूंढले उनके निशा....

घबरा गया क्या बावरे,
कर अश्क की बरसात ना,
देगी तेरा ये साथ ही
दहशत बेचारी रात ना,
तूं आदमी है डर नही,
वरना हसेंगी ये फिजा ...

बेकार वक्त न गंवा,
चला गया है कारवां,
जो खुद का खुद होता नही,
कोई न उसका पास्वा ...

• • •

हम राही उस मंजिल के

पूजा की थाली हम लाए,
सुमन हमारे इस दिल के,
जिसमें हो न कभी अंधेरा,
हम राही उस मंजिल के।

इश्के-वतन का जाम पिलादो,
हम प्यासे है सदियों से,
देशभक्त हैं नगमागार,
हम मेहमां उस महफिल के।

दामन फैलाकर अपना,
खुदा से मांगे सारी खुशियां,
अपने नहीं, वतन की खातिर,
हम साथी उस साईल के।

कुर्बानी के लिए चलेंगे,
जहां पे चाहो ले जाओ,
जो मिट जाए विश्व की खातिर,
हम दीवाने उस दिल के।

• • •

कौन डरता है प्रलय से

उठ रहे नभ में प्रभंजन,
हो रहा क्षिति में प्रकपन,
क्षितिज की प्राचीर सारी, बात करती तिमिरमय से।

लो सभी दीपक बुझाकर,
है समीर जाती इठलाकर,
दृग ज्योति अब भी जल रही है, देख शक्ति के विलय से।

नृशंस मानव रोक लेंगे,
राह सारी, शोक लेंगे,
आ रही प्रतिध्वनि यही बस, आज उत्साहित हृदय से।

ठीक है सब बन्द राहें,
आ रही गमगीन आहे,
पर नहीं लेंगे, है मानी भीख हम दय की सदय से।

अतृप्त बालक रो रहे है,
कुछ प्राण अपने खो रहे है,
त्याग लक्ष्य का करेंगे, न बचे इतने निलय से।

ये जिवा- संघर्ष होना,
है यहां -सर्वस्व खोना,
आज प्रत्युत्तर भी लेंगे, क्यों घृणा पावन प्रणय से।

क्रांति आएगी कभी अब,
देखना, हैरान तुम सब,
जिसको तुम ठुकरा रहे हो, भाव के पूरित हृदय से।

ले के हाला, भर के प्याला,
बन के मदिर चाल वाला,
है यहा निश्चिताओं भय भी डरता है अभय से।

• • •

न जाने फिर कभी

है पीछे का सफा शायर,
तू जो भी लिख सके लिखदे,
न जाने फिर कभी,
पहले सफे को छू भी न पाए।

अंतिम है महफिल ये,
मुगन्नी गा दे अपना गीत,
न जाने फिर कभी,
ये महफिल जम ही न पाए।

बढ़ा जल्दी कदम अपने,
सफर है आखिरी राही,
न जाने फिर कभी,
तेरे कदम, चलने भी न पाएं।

खुदा का नाम ले लेना,
जुबा से आज तो साकी,
न जाने फिर कभी,
बेहोशियां न होश मे आएं।

• • •

अगर ताकतें हो

लो हम आज लिखते है, सरकश तराने,
अगर ताकतें हों, तो रोको कलम को,
लो हम जा रहे, रहजनी ऐ जज्ब को,
अगर ताकतें हो, तो रोको कदम को ।

जहन मे ये लाखों
सवाल आ रहे है,
अजमते – खुदाया,
ख्याल आ रहे है,

मगर हम मुगन्नी, दहर के बनेंगे,
अगर ताकतें हों तो रोको समन को...

खला औ खामोशी
मे बरबत बजेंगे,
इन रोती हवाओ
मे गुलशन सजेंगे,

अब आतिशयारो की शबनम बनेंगी,
अगर ताकतें हो, तो रोको चमन को....

शुआएं सम्स की भी,
जुलमत बनेगी,
मश्क कर ये जम्हूर,
बेरहमत चुनेगी,

पैगामे बका देंगे, अज्मे फना को,
अगर ताकतें हो, तो रोको भी हमको....

• • •

है निकलती आह देखो

अर्थ स्वय का पूर्ण कर-कर,
कौन सुनता कर्ण घर-घर,
ज्योति की जलती किरण से, है निकलती आह देखो।

प्रबल झंझावत मे भी,
इस तमिस्रि रात मे भी,
जल रहा दीपक अकेला, अटलता की थाह देखो

आरती की हैं चिताएं,
निज हृदय पर यातनाए,
मुग्धकारी इस वदन का, ये अनोखा दाह देखो।

कण्ठ प्यासे क्षार पीते,
मरण के इच्छुक भी जीते,
है मनीपित कुछ नही, किन्तु रहे सराह देखो।

दिवस अन्तर थी लड़ाई,
प्रणय करने रात आई,
नार-नर का व्यस्त जगती में, सबल निबाह देखो।

मन औ' मस्तिष्क लड रहे हैं,
पद क्षिति पर पड रहे हैं,
जानते हो, किस तरह ये, ढूढते है राह देखो।

जटिलता को जानते हैं,
उलझना भी ठानते है,
व्यर्थ ही जल जल मरण को, ये पतंगी चाह देखो।

• • •

प्रतिकार लेता है जगत

न याद रखना भूल है,
और भूल गम का मूल है,
कुत्सित कर्म के काफिले से,
सार लेता है जगत्

मुझसे हुए दुष्कर्म का,
प्रतिकार लेता है जगत्....

है मान्य मुझको कि कभी,
अपराध मुझसे हो गया,
भय से जरा भयभीत हो,
मैं पैठ भीतर सो गया,
ये धारणा मेरी रही,
जग ध्यान न देता कभी,
जो हो गया जग में सभी,

स्वीकार कर लेता है जगत् ..

मैं तो कभी प्रतिदान में,
हिस्सा नही लेता मनुज,
पर है सहन भी न मुझे,
कि सब कहें मुझको दनुज,
कब तक रहूं चुप तू बता,
ऐ बीतती काली क्षपा,
ऐसा कि पल में गिर पड़े,

अभिसार देता है जगत् .

हर काम में दोषी कोई
भी, एक तो होता नही,
कारण कई कर्ता अकेला,
क्या करे रोता नही,
विपदाओं मे आकर पडा,
जग देखता सन्निकट खड़ा,
कठिनाइयों के मार्ग को,

विस्तार देता है जगत् ..

स्वीकार न करता अगर,
उदण्ड कहता है मुझे,
स्वीकार कर लेता अगर,
बेकार कहता है मुझे,
कर तर्क भी तहरीर दू,
पर फायदा कोई नही,
झूठी गवाही का मुझे,

व्यापार देता है जगत् ..

मैं चाहता करना नही,
जो कुछ यहां पर हो रहा,
मैं चाहता मरना नहीं,
हर श्वांस लेकिन खो रहा,
न दान लूं ये प्रेरणा,
साहित्य दे रहा मुझे,
पर इस हृदय में उठ रहे,

उद्गार लेता है जगत्

• • •

रूसवा न कर हयात को

रुसवा न कर अहले-जहां,
इमरोज नामे-हयात को,
नादान बन कह नही,
जनाजा हसी बारात को,

ऐसा नही कि जिन्दगी,
हर लम्हे पर बार है,
इन राहो मे गुल नही,
हर राह पर खार है,
रूखे-रगी पे रानाईया,
देख इस ताल्लुकात को....

नीलाम कुछ होता नही,
इन्सान की दुकान पर,
देखी है क्या ये छापरें,
तूने किसी ऐवान पर,
गर सतवते-शाही न मिला,
गिरा तो न इस इमारत को....

किनारा कोई कर जाए तो,
है क्या कसूरे-जिन्दगी,
अकीदत भरी ये इल्तजा,
करता हुजूरे - बन्दगी,
सब्र कर अपने सभी,
के दिल पे इन ख्यालात को....

आई है गम की याद तो,
याद कर गमगीन हो,
आई खुशी की याद तो
याद कर रंगीन हो,
इस मे तो कुछ बुरा नही,
बदलता ही चल हालात को

• • •

नहीं ख्यालों का साया

इस जिन्दगी की राह मे,
ना कुछ नजर नया आया,
वही फिजा की खामोशी,
वही ख्यालो का साया....

इक कदम उठा तो हलचल थी,
दिल में जाने किन बातों की,
जो तन्हाई मे बीती थी,
थी याद वो शायद रातो की,
वही वफा तू, वही जफा वो,
करते हैं फिर समसाया ...

हंसी ने गुल खिला दिए,
वो अश्क की बरसात थी,
जो भूल न पाए कभी,
ऐसी सभी सौगात थी,
जो चाहा दिल ने याद किया,
वो भुला दिया जो ना भाया ...

वो मंजिलो को दौड़ते,
कुछ राह सीधी मोडते,
कुछ हाथ यो ही छोडते,
कुछ दिल से दिल को जोड़ते,
इसमें गया खो कुछ मेरा,
और कुछ यहा पर आ पाया....

• • •

साधना मैं कर रहा हूं

हो अमित शक्ति मेरी,
जगती को मैं हैरान कर दूं,
हों नियति कदमों तले,
मण्डप भी मैं श्मशान कर दूं।

सिद्धियां हो प्राप्त या ना,
साधना मैं कर रहा हूं।

हार ना मेरी हुई है,
जीत न देखी कभी भी,
देख आखो के इशारे,
न नजर बहकी अभी भी,

संयमी जीवन लिए अब,
सामना मैं कर रहा हूं।

मैं नहीं कहता कि मुझको,
दान में यश आज देदो,
नित स्वयं बजता रहे जो,
वो अनोखा साज देदो।

छू सकूं उचाइयां बस,
कामना मैं कर रहा हूं।

कोई कहे दुर्दैव की,
कोई कहे सदैव की
बस मानवी, हां मानवी की,
साधना मैं कर रहा हूं।

• • •

दुश्मन मेरे वतन के

अहबाब ज्यों बहारें,
दुश्मन खिजां चमन के,
वैसे हो लाख दुश्मन,
अब हैं मेरे वतन के.

पहला गनीम तो है, बेइन्तहां गरीबी,
दोयम गनीब इसका, शायद ये बदनसीबी
दोनों मिले है ऐसे,

भगवान हो ये जन के..

मानिंद पात के ही, सूखे हुए बदन हैं,
झड़ते हैं पत्र जैसे, अरमां लुटे ये मन है,
अब बागवान कोई,

पौधे है उस चमन के.

है जौंक की तरहा ही, सब मे ये बेईमानी,
अंकुर भी देख करके, करने लगे हैरानी,
ऐसे समझ रहे है

हम ना है इक सदन के...

टूटा हुआ है सेतु इनके तो अब सब्र का,
मर जाएगें मगर ये, देखे न मुंह कब्र का,
देना न चाहेंगे सब,

पैसे भी इक कफन के..

दानी को भूलकर अब, कजूस हो गए हैं,
और कुछ भले आदमी, ले घूस सो गए है,
जिन्दा न जिन्दगी है,

अब है गुलाम धन के...

ऐसे ही लाख दुश्मन
अब है मेरे वतन के ।

• • •

बताओ कौन आएगा

तुम्हारा क्लेश लेने को,
तुम्हें सब राग देने को,
अरे प्यारे अकर्ताओ,
बताओ कौन आएगा ?

प्रकपन वेग पर अपने,
क्षिति पर चाल चलता है,
शमां, दीपक या कोई और,
नही चिराग जलता है,
यहा पथ मे तड़ित देने
बताओ कौन आएगा ?

पयोधर ने छिपाए हैं
हमारे चन्द्र औ' सविता,
दिवस लगते हैं रातो से,
कवि बैठा बिना कविता,
तुम्हारी असलियत गाने,
बताओ कौन आएगा ?

उठा विश्वास सुर पर से,
तो मनुज पर कहां से हो
जहां दरार हो मन मे,
वहा ऐक्य कहा से हो,
तुम्हारे दिल मिलाने को
बताओ कौन आएगा ?

उठो, बैठो न यो तुम सब,
रुका है वक्त से क्या कब
कर्म सिंधु बनाना है
काम चला न सर से अब
करो अब होड़ ये सारे
कि पहले कौन आएगा ?

• • •

आज जाना चाहता हूं

फिर सुनादे आज कोई,
ऐ कवि, कविता बनाकर,
कल्पनाओं के नगर मे,
आज जाना चाहता हूं।

छोडकर सब जल्पनाए,
स्वागतम् की अल्पनाए,
कटकों की राह टेढी, आज पाना चाहता हूं।

अश्रुकण न खो सकूंगा,
धूल अब न धो सकूंगा,
पाव में काटे चुभाकर, आज गाना चाहता हूं।

तोड दूंगा बाढ़ सारी,
आपदाए फेंक सारी,
प्रिय वही अपशब्द रूपी, शाप पाना चाहता हूं।

रात की अधेर राहें,
दीप की जलती निगाहे,
आज साधन को भुलाकर, लक्ष्य पाना चाहता हू।

कलश अमृत के भरे है,
अर्थ उसके लड़ मरे है,
सम्प्रति में आज लड़कर, जहर पाना चाहता हू।

भूलकर यथार्थताए,
और अपनी कल्पनाए,
वीक्ष्य न सच्चाइयों को, झूठ गाना चाहता हूं।

स्वर्ग अभिलाषी नही मैं,
नरकवासी भी नही हू,
छोड़कर जग को ही जग मे, आश्रय पाना चाहता हूं।

• • •

जाने न क्या हम चाहते

है जिन्दगी प्यारी हमें,
लेकिन न जीना चाहते,
आगे जहर तो रख लिया,
लेकिन न पीना चाहते।

खुद पूछते बातें सभी,
हम ज्ञानवर्धन के लिए,
दे जब कोई उपदेश तो,
हम कुछ न सुनना चाहते।

पैगाम तो आया हुआ,
हैं जाने को मेरा मन नहीं,
है साज भी ये बज उठे,
लेकिन न गाना चाहते।

लाखो मिली है पुस्तकें,
भूलते रखकर जिन्हें,
सोपान मंजिल के बहुत,
लेकिन न चढ़ना चाहते।

अच्छा ही हो दुश्मन मरे,
पर कत्ल न कर पाएंगे,
हथियार डालेंगे यहां,
लेकिन न हारना चाहते।

खुशियां भी नियति से मिली,
चुनना हमें मंजूर ना,
है -अक्ष में आसू भरे,
लेकिन न रोना चाहते।

किसको कहे और क्या कहें,
जाने है हम क्या चाहते,
खुद ही समझ पाए नहीं,
जाने न क्या हम चाहते ?

• • •

रात ढ़लती जा रही थी

हम अहम् न छोड़ पाए,
रात ढलती जा रही थी ।

उसने सोचा हम झुकेंगे,
हमने सोचा वो झुकेगा,
सोच न पाए अजानी,
कब ये चिंतन क्रम रुकेगा,

इस हृदय की भावनाएं
हाथ मलती जा रही थी....

आकर सितारो ने कहा,
हम टूटकर गिर जाएंगे,
सूनी न होगी माग ये,
हर झिलमिला भर जाएंगे,

मस्त भावो को बहाओ,
ये हवा सिखला रही थी ...

दूर से रुन झुन सुनाई,
दे रही थी पायलो की,
देखता चुपचाप मैं यों,
याचना वो बादलो की,

है किधर उसका निशां,
बिजली चमक दिखला रही थी ...

उड़ गई चुनरी किसी की,
केश लहराने लगे,
सब देखकर वो नजाकतें,
पत्थर भी मुस्काने लगे,

पर ये हृदय की धड़कनें,
भूला सा याद दिला रही थी....

• • •

तो जा न तूं बाजार को

महगा है ये सस्ता नही,
कम उम्र इसकी है, बड़ी
उसकी, यहलो, वो नही,
यों भ्रमित दृग से ताकता,
इस आपणा औजार को,
गर जानता कीमत नही, तो जा न तू बाजार को ..

लुट जाएगा, लूटेगा जग,
फिर यों उड़ा देगा ज्यो खग,
कितने ही यत्न कर भले,
वचकर के जाएगा कहा,
छल कर छली संसार को,
ये सर्वशक्तिमान है, तूं सह न सकेगा वार को ..

आया दवा लेने यहां,
रोगी हैं ये चिरकाल का,
अस्वस्थ सूरत देखकर,
ब्योरा बता इस हाल का,
अस्मित बुला बीमार को,
गर वैद्य-सी बुद्धि नहीं, न कह प्रपच आजार को....

विध्वंश की इच्छा न रख,
निर्माण ही महान है,
पग-पल प्रतिपल ही बना,
न सोच तू मेहमान है,
कर ले क्रिया व्यापार को,
पर पहले पिरोना सीखले, फिर तोड मुक्ताहार को....

न आत्मज्ञानी से चलेगा,
काम ऐ कामी मनुज,
होना पड़ेगा एक दिन,
इस जग का अनुगामी मनुज,
कर तर्क निज आचार को,

क्यो याद रखेगा जगत, भूले जो तूं ससार को
गर जानता कीमत नही, तो जा न तूं बाजार को....

• • •

मैं संभाल नहीं पाया

और कोई भी राह नही थी,
सचमुच मेरी चाह नही थी,
जिसने ढूंढा बीहड़ बन को,
वो मेरी निगाह नही थी,

फिसले दल दल मे पांवो को,
मै संभाल नही पाया ।

अगर सोचता वक्त बहुत था,
सुलझाता उलझन वो सारी,
पर केवल चिंतित रहने से,
दूर नही होती बीमारी,

दी तेरी उस लघु सलाह को
सच, मे टाल नही पाया ।

आज वही अस्तित्व हमारा,
उस युग की हर धूप-छांव मे,
नही जानता कोई हमको,
देख हमारे प्रिय गाव में,

थी गलती उसके सांचे में,
खुद को ढ़ाल नही पाया ।

बदनामी के अंधेरे मे,
शक का दीप जलाकर कोई,
ताक रहा था मेरा चेहरा,
टूटा साज बजाता कोई,

पर, प्रज्वलित चिता मे प्रिय मैं,
खुद को डाल नही पाया ।

• • •

बदल दो एकदम

बढ़े चलो बहादुरो, हटो न इक कदम,
आज के समाज को, बदल दो एकदम

मिटाओ सारी दूरियां,
गिराओ हर दीवार,
घृणा की डोर तोड़,
प्रेम का ये बांधो तार,
चलो जहां से आ रही है
वक्त की पुकार,

देश के लिए खुशी लुटा, लेलो कोई गम...

संकीर्णवाद छोड़ दो,
व्यापक करो विचार,
स्वतंत्रता, समानता,
अपना रहे आधार,
कोई भी आ सके यहां,
बने ये वो आगार,

कहो बना रहा हूं मैं, मगर रहेंगे हम ...

कनक रजत को छोड़कर,
जीवन की जीत हो,
पुरुषार्थ पर डटे रहो,
हमारी रीत हो,
कर याद हम रोए नहीं,
गया जो बीत हो,

कर्मवीर, धर्मवीर हों, न कोई कम ...

भ्रष्ट आचरण करे,
तो जड ही काट दो,
असत्य की गिरा की,
खाइया ही पाट दो,
मिले तुम्हे जो राह मे,
सभी मे बांट दो,

क्रांतियां आए मगर न भाव हों गरम...

• • •

अब पार्श्व मे रह रहे,
भी तो यहां अन्जान है,
बिखरे नही, टूटे सही,
सबके यहां अरमान है,
मागा सदा करते यहां
निस्तार ही अब भोर से....

हो क्रातियां ही सब जगह
इसका यह मतलब नही
हो पाएगा न कुछ मगर
मौड़ो मरे इस शोर से ।

• • •

कौन सी होगी

मुसाफिर मजिलें तेरी,
कहां, कब, कौनसी होगी ?

है ये लम्बा सफर इतना,
कि रुकना भी जरूरी है,
बता फिर कुछ ठहरने की,
वो घड़ियां कौन सी होगी ?

कही दल–दल, कही कल–कल,
मिले, पर वो विषैले फल,
बिना खाए रख जिन्दा,
वो जड़िया कौन सी होगी ?

कही विपदाएं देखकर के
तेरे कदम लौटें इधर,
दिल से साहस जोड़ दें,
वो कड़ियां कौन सी होगी ?

याद आए कोई भी तो,
न वस्ले – वक्त आएगा,
दिलासा दें वहा तुझको,
वो घड़ियां कौन सी होंगी ?

न काम आ पाएगे हम सब,
तू अपने काम आएगा,
विजय का हार पहने जो,
वो लडिया कौन सी होंगी ?

• • •

देख ले सुनसान है

तू कह रहा था है बस्तियां,
खुद देखले सुनसान है,
जो दाम है दो हाथ में,
तो मुझ पे क्या अहसान है ?

तू है सभी कुछ जानता,
फिर क्यों न दिल मे ठानता,
कुछ सोचकर कर तो सही,
सब मुश्किलें आसान है....

है कौन सा वो ढंग तेरा,
ये पता चले, चाहे तू क्या,
कुछ ये जुबा कहती नही,
और ये नजर वीरान है....

महफिल तेरी सजी नही,
कोई फदल हो भी क्यों,
खामोश शख्स यों सो रहे,
ज्यों ये ही कब्रिस्तान है....

बीते क्षण, आए फजर,
मुझ पर मगर कुछ न असर,
मुझ को तो शक इसमे ही है
कि तू भी एक इन्सान है....

करता तू ये इल्तजा,
आए नही तुझ पर कजा,
सुनता नही कुछ भी मगर,
पत्थर तेरा भगवान है..

तेरे ही घर को लूटता,
तेरे ही हाथों से छूटता,
ऐसों से तेरी दोस्ती,
ऐसा तेरा मेहमान है....

है कैद मे अपनी ही तूं
बस अब ,सजा सपने ही तूं,
तेरी हकीकत है जमी,
और आसमां अस्मान है....

• • •

भूल जा अन्जाम को

देता कभी वरदान था,
तूं भूल जा उस राम को,
जो दे अमित शक्ति तुझे, तू याद कर उस नाम को।

विश्व की हर मांग ने,
लिखा है तेरे नाम कुछ,
और वक्त देने आ गया, तूं देख उस पैगाम को।

चलते हुए आएगे सब,
गम भी खुशी के साथ मे,
खुशियों में ज्यादा खुश न हो, रोना न गम की शाम को।

जिस ओर राहें दिखती,
उस ओर कदमों को बढ़ा,
बस देखकर जी भर नही, अपने किसी मुकाम को।

जब तक मिले कुछ भी नही,
रुकना नही है दोस्तों,
जी तोड़ श्रम करते रहो, सब छोड़ दो आराम को।

तूं बन उपासक प्रेम का,
नफरत जला दे, राख कर,
बदले में गर फिर दे कोई, करदे मना उस दाम को।

अपना भला सोचे सदा,
सुख औ'दुःख से बेखबर,
आ साथ दूंगा मैं तेरा, तू छोड़ दे उस धाम को।

उलझन भरे न काम हों,
सब जान पाए भी उन्हे,
एक जाल फैला दे यहां, करना नही उस काम को।

बस आज मन मे ठान ले,
तूं कर्म करने की प्रिय
कैसा भी हो, जैसा भी हो तूं भूल जा अन्जाम को।

• • •

न ये गुलजार है

खिजाओ तुम्हें मेरे गुलजार से,
बताओ तो क्यो, इतना प्यार है,
मेरे इस गुलिस्तां मे कलियां नही,
जरा गौर फरमाओ हर खार है...

बहारें तो मेरे चमन की गली
से, अब तक निहायत ही अन्जान है,
न जाने क्यो फिर भी मेरे बागवा
को उन्ही सब बहारो का इन्तजार हैं....

खुदा सगदिल तो होता नही,
यही हम अभी तक सुनते रहे,
मगर अब पता चल गया है हमे,
खुदा सगदिल का ही इक यार है....

गुलिस्ता इसे कह रहे है मगर,
गुलो का यहा नामोनिशां भी नही,
है काटो की बगिया मेरे दोस्तो,
इसे तुम न कहना कि गुलजार है....

• • •

न चाहे अनुराग न दे

अवनि के अधरों को अम्बर,
आज रुदन का राग न दे,
घृणा न कर मेरे हृदय से,
न चाहे अनुराग न दे. ..

जगती की नजरों मे दोनों,
एक दिखा करते हैं हरदम,
व्योम धरा मे, धरा व्योम मे
ऐसा उपमित करते कविजन
इस पवित्र सम्बन्ध चीर को
तू अपयश का दाग न दे.. .

शाम ढले लाता था हरदम,
तू तारों की चुनरी मेरी,
चन्द्र बना मधुधर लाती थी,
मैं हाला की गगरी मेरी,
अपने मुंह से कह न अभागिन,
तू सिन्दूर सुहाग न दे........

प्रणय ऋतु आई जब तूने,
पुलकित अग-अंग कर डाला,
याद है पहनाई थी तू'ने,
खिलते कलि-सुमनों की माला,
जोगिन जान मुझे तू प्रियतम
ये विरहा की आग न दे........

मेरे आंसू देख कभी तूं,
यूं मुर्झा जाया करता था,
देख मेरे अधरो पर गाना,
सग गुनगुनाया करता था,
ले शुभ दिन त्यौहार सभी तूं
रक्तमयी ये फाग न दे.. ....

• • •

करके ही कुछ ले पाएगा

किसके लिए बैठा यहा,
कोई नही अब आएगा,
कर वक्त को बेकार तूं,
मानव न कुछ भी पाएगा ।

चल उठ खड़ा हो बावरे,
काहे को तू बैठा यहां,
ले साज अपने हाथ में,
कह गीत कौन सा गाएगा ?

धीमी गति को छोड़कर,
तू दौड़कर तो देख ले,
मन पर भरोसा रख, प्रिय
तू लक्ष्य को भी पाएगा ।

ईश्वर की कर आराधना,
ना भूला जाना तू उसे,
है वही, जो तेरे को सदा,
अभिष्ट राह दिखाएगा ।

गम को खुशी समझे सदा,
ऐसा जहा अपना बना,
करले तू प्रण ये आज ही,
हर हाल में मुस्काएगा ।

जीवन का हर पल ही तुझे,
शिक्षा बहुत देकर गया,
तू ज्ञान का आगार बन,
विद्वान पद भी पाएगा ।

सरे आम बता रे

खामोश जगत देख,
परेशान सितारे,
क्या बात हुई आज,
सरे आम बता रे ...

टूटा है मका तेरा, तेरे हाथ बनाया,
लुटता है जरा देख, ये संसार सजाया,
चिंतित है या अन्जान, नही जानता हूं क्यो ?

बैठा है तूं चुपचाप
बुझा दीप ये सारे .

यू घूम रहा तट पे रात्रि के प्रहर मे,
आंसू भी नही दीखते है, तेरी नजर मे,
मैं सोचता हूं हो रही है कशमकश दिल में,

क्यो पा न सका नाव लिए
तू वो किनारे ...

क्या प्रेम के एवज मे मिला, क्लेश है तुझ को,
हसते हुए चेहरे पे लगे, श्लेष है मुझ को,
पागल की तरहा ताकता यूं डोल रहा है।

क्या याद तुझे आ गए,
जन स्वर्ग सिधारे ..

कहता था नापसन्द है ये तन्हाइयां तुझ को,
मातम न ये खामोशी शेहनाइया तुझ को,
आक्रोश दिखाता है या, पीड़ित है तेरा मन,

छोड़े हैं या छूटे हैं तेरे
साथ–सहारे....

कहता है ये मासूम-सा चेहरा मुझे तेरा,
जग की ना उम्मीदों ने तुझे तोड़कर घेरा,
बनता है गुनाहगार क्यों, मुंसिफ के सामने,

पाकीजा हैं ये जान सिर
इल्जाम न लगा रे....

• • •

आंसू तेरी मजार पर

आती है यादें प्यार मे,
जाती है बेकरार कर,
रोके नही रुकते मेरे
आंसू तेरी मजार पर..

याद आती है मुझे,
तेरी तड़पती जिन्दगी,
जालिम खुद से की गई,
नाकाम तेरी बन्दगी,
ये ठीक है पतझड़ तेरा,
हक न कोई बहार पर...

दीपक जलाते हैं सदा,
तेरे सफर की राह में,
रोज आते हैं यहा,
तुमसे मिलन की चाह मे,
नभ पर सियाही छा गई,
परदा पड़ा है अनवार पर .

गम है बस इस बात का,
अहसान मैं न चुका सका,
जिन्दगी के सामने,
मैं मौत को न झुका सका,
निश्चल यूं ही बैठा रहा,
मैं ताकता दीवार पर....

तस्वीर तेरी देखकर,
दिखता है तूं चलता हुआ,
शाम के ही शाम गम,
अन्दाज से हसता हुआ,

शून्य में रह जाती है फिर,
दृष्टि मेरी निहारकर ...

मैं भावना में बह गया, बहना न वो भी बह गया,
अब तो न कुछ भी रह गया, सब आंसुओं में बह गया,
बहना चला जाता मिए, तेरी कम्पित पुकार पर ..

• • •

हो न हो प्यारे

जरा सी देर आ घूमें,
रवि की रश्मियां चूमें,
कमल को देखलें जी भर,
बहालें धूप में सीकर,
दिवा में खोजलें तारे,
सुबह फिर हो न हो प्यारे ..
क्षपा का आगमन होगा,
नींद का आक्रमण होगा,
शयन, शैया और शयनागार,
जाए सोते हुए मारे .
कदम भर द्वार से जाकर,
दीपमालाए लिए आएं,
बातियां ढेर सारी हम,
सभी मिलकर बना जाएं,
अजोरे दीप ये सारे....
उठाओ सुप्त जन-जन को,
बुलाओ लुप्त कण-कण को,
प्रभाती गान गाना है,
प्रभा फेरी लगाना है,
करें उद्घोष ये आरे. ..
अंधेरा आ के घेरेगा,
नहीं फिर पीठ फेरेगा,
तरस जाओ दिवाकर को,
बने हैं शत्रु ग्रह हमारे ...
अंशुमाली को तर्पण कर,
लाओ, हर पात्र में जल भर,
विश्व मिलकर करें आकर,
भानु को अर्घ्य हम गारे
सुबह फिर हो न हो प्यारे....

• • •

मर गए सावीर सहकर

न सुनाता गीत गाकर,
सकल पीडाएं छिपाकर,
भूलता ना है, भुलाकर,
याद कर कलमें उठाकर,

आज लिखता है कथाएं,
लोचनों से नीर बहाकर....

वृद्ध युग विरोध तेरा,
कर रहा वर्तमान मेरा,
नासमझ हर एक युवक,
तोड़ना हर एक घेरा,

रख दिया संसृति समय का,
युवकों ने चीर तहकर...

करते उचित सब काम सारे,
पर, है अनुचित यह पुकारें,
है हुई हानि कोई भी,
भूल जाता है जगत,

उठकर पुनः बनती नहीं,
बिन यत्न ही प्राचीर ढहकर ...

स्वार्थ अपना याद करके,
जग पे अत्याचार करके,
निर्धनों पर आज हंसकर,
शान से बैठे हुए सब,

पी रहे हैं रक्त जन का,
उच्च वर्गी क्षीर कहकर....

हाय-हाय क्यों पुकारे,
देश के सुन्दर सितारे,
आर्त तन-मन आज सारे,
तेरी औरो के ही जैसे,

मिट गई स्वयं कुछ समय के,
बाद तन की पीर रहकर....

वेद कहता सहन करना,
भार अपना वहन करना,
साधु संत कवि अनंत,
दे गए उपदेश ये पर,

उलझनें न सुलझ पाई,
मर गए सावीर सहकर....

• • •

निस्तार है किस ओर से

फट जाए परदे कान के,
गर बोलते हैं जोर से,
लेकिन कहो कैसे बचें
अपने ही घर के चोर से....

इस रश्क का शासन यहां,
और अश्क का आसन यहां,
घिरता हुआ इन्सान है,
गिरता हुआ आसमान है,
गर दे यहां आवाज तो,
आए कोई किस ओर से....

दृग बन्द कर बैठे सभी,
तिमिरावरण या है यहां,
हैं ये किसी में खो गए,
या सो गए हैं सब यहां,
कैसे ये बांधे जाएंगे
अनुराग की इस डोर से....

दरिया में कश्ती देखकर,
ही डर रहे इन्सान हैं,
कुछ जोर से चलकर ही अब,
आते यहां तूफान हैं,
कैसे मंगाए जाएंगे
मोती ये गोताखोर से....

सब ही तेरे जैसे यहां
घबरा रहा फिर किसलिए
बिन सांस ले गतिमान हो,
ये भाग्य फिर रंग लाएगा।

यों ना तुझे देगा, कोई, करके ही कुछ ले पाएगा,
कर वक्त को बेकार तू, मानव न कुछ भी पाएगा।

• • •

कही ऐसा न हो

कही ऐसा न हो ऐ मेरे खुदा,
जिन्दगी ख्वाब ले के सो जाए,
मेरी लग्जिश का मेरी जिन्दगानी,
हाय किस्मत ! क्यूं अब सिला पाए....

मेरा मकसद फकत नही इतना,
कि तसव्वुर ही बस ये पूरे हो,
मैं भी न महवे-यास हो पाऊ,
उनके अरमान भी न पूरे हो,
है मशीयत मे कश्मकशे आलम,
और मायूसियां भी आ जाएं ...

मेरा दिल है गिला गुजार नही,
है ये नादान गिला करता है,
कभी तकव्वुर मे डूब जाता है,
कभी ये खुद गुहार करता है,
पर है अन्जान सब फरेबों से,
जुल्म सहते हुए चला जाए....

• • •

सदाएं सवाली

दामने-चाक मे डालो नही,
खैरात की चीजे,
अगर देना ही है कुछ तो,
दामने-तो तो सिलवादो।

करोगे क्या सभी कुछ तुम,
सियह् अम्बार मे रखकर,
हमारा घर किराए पर,
ही बस एक बार भरवादो।

जो दहने-मौत मे गए,
चलो उनको भुला देंगे,
मगर अब के बीमारो का,
तो तुम इलाज करवादो।

साल-ए-नौ को देते हो
ये सदाए मुबारकवाद,
फकत-अय्याम की खातिर
हमे दाने तो दिलवादो।

• • •

क्या पाएंगे ?

हो रहा भयभीत मेरा,
सोचकर कोमल हृदय ये,
पत्थरो की राह पर क्या,

पद्म-पद चल पाएगे ?

लोग कहते है चिताए
आदमी को राख करती,
हो चुके जो राख पहले,

क्या पुन. जल पाएगे ?

आज अपने ही विरोधी
है, कोई दूजा नही,
अपनी ही गर्दन पे क्या,

चाकू-छुरे चल पाएगे ?

शाम हो मेरी सुहानी
हर मनुज ये चाहता है
देवलो मे अर्चना से

गमगीन दिल ढल पाएंगे ?

हो रहा सत्य अकेला,
झूठ की नगरी मे मेला,
बन मनुज ये मनुजता से,

आज क्या हल पाएंगे ?

ये नई है आपदाएं,
हम तुम्हे कैसे बताएं,
सोचता हू नव से क्या

सकट पूरा टल पाएगे ?

• • •

इस भाव को

बात सुन आधी सभी ही,
राह अपनी ले रहे हैं,
सोचकर घृणित हृदय है,
समझा न कोई स्वभाव को।

ये अहकारी प्रवृति,
खीचती है तार सारे,
जान लो न मिटा सकेगा,
कोई दूर बैठा तनाव को।

जिन्दगी काफी बडी है,
आज का पल न लुटाओ,
पूर्ण न कर पाओगे,
पल मे जिवा के चाव को।

व्यस्त जीवन है, समय न,
ग्रथिया, सुलझा सके,
कौन हो एकत्र बांधे,
बढते हुए दुराव को।

ससृति सिद्धान्त सारे,
आज झूठे बन चुके है,
कर गया बेचैन कोई,
त्याग के इस भाव को।

• • •

आज पपीहे और न बोल

माना बड़ा वियोगी है तू,
पीडा तेरी गहरी है,
तेरी प्रेमिल ये धड़कन औ
दृष्टि घन पर ठहरी है,

पर कर्णहीन वह नही सुनेगा
आज पपीहे और न बोल ।

हृदय बनाए स्वप्न सुनहरे,
कितने ऊंचे, कितने गहरे,
खण्डित करता है वो निर्मम,
परिवर्तित रूपो पर पहरे,

बांट रहा है किसको आसू
आखो की पलको पे तोल ।

सभी अहर्निश एकाकी है,
मगलमय हो शाम सुहानी,
पर जन को तूं दुआ दे रहा,
भूल निजी गमगीन कहानी ।

इन्तजार किसका करता है,
रात गए दरवाजे खोल ।

जल है उसकी दौलत माना,
जिससे तेरी प्यास बुझेगी,
लेकिन वो निष्ठुर ये सोचे,
ये मासूमी मुझे ठगेगी ।

प्रणय याचना अधिक करी जो,
रख देगा हाथों पर मोल ।

• • •

आज कोई जा रहा है

दीपको जलकर दिखाओ,
पथ-पथिक को आज अपना,
छोड़कर अंधेर नगरी,
आज कोई जा रहा है।

बादलो गर्जन करो न,
दामिनी न तू कड़कना,
शांत हो ऐ व्योम तूं भी,
आज कोई जा रहा है।

मित्रगण नि:शब्द क्यों हो,
बोलती क्यों रुक गई है,
'अलविदा' कहना क्यों भूले
आज कोई जा रहा है।

व्यतीत पल अतीत है अब,
स्मृतियां ही शेष होंगी,
बांध सब सामान अपना,
आज कोई जा रहा है।

ना घृणा का साथ देना,
ये प्रणय का समय है,
अब दोनों त्याग करके,
आज कोई जा रहा है।

अश्रुओ कुछ पल ठहरना,
भावनाओं के प्रवाहो,
तेज बहकर न डुबाओ,
आज कोई जा रहा है।

बोल ऐ जिह्वा हमारी,
है यह अंतिम मिलन
तोडकर रिश्ते सभी
आज कोई जा रहा है।

आखों मे आंसू लिए,
यादगार अपनी दिए,
लेन – देन सब चुकाकर
आज कोई जा रहा है।

• • •

सो रहा है

चाद है पीडित हमारा,
ओढ चादर सो रहा है,
तारकों का दल विवश है,
नभ उदासिल हो रहा है।

पल्लवो मे शोक छाया,
पर तरु न रोक पाया,
शात ही उपवन खड़ा है,
फूल मुर्झाया पड़ा है,
पूछते भंवर औ कोयल,

क्या हुआ ? क्या हो गया है ?
कूल से मिल पूछती है,
लहर तेजी से उछलकर,
ना डुबो में किसी को,
नाविको से पूछ लेना,
चाद की पीडित दशा मे,
क्या कुछ सुधार हो गया है ?

मेघदूतों जा के पूछो,
पर न तुम अश्रु बहाना,
देख कर हालत क्षपाकर
की, लौटकर हमको बताना,
आंख खोली है जरा सी,
या अभी तक सो रहा है ?

आ रही है ये हवाए,
सदेशवाहक कुछ बताए,
क्या है पीड़ा आज उसको
कह तू क्या है रोग उसका,

क्या कहीं उसका चिकित्सक,
धैर्य तो न खो रहा है ?

पृथ्वी-नभ पर है अंधेरा, जागता मानव है मेरा,
है प्रतिक्षा कर रहे सब, उठती चादर वदन से कब

शान्त जगती मे बडा ही
व्याप्त भय अब हो रहा है ।

• • •

दावा न कर

होगा चाद घने बादल मे,
या इस अधेरे आंचल में,
यहा रोशनी नही चांद की,
हर एक से ज्वाला उठती है,

देख तमिस्रि रात अमां की,
पूनम का दावा न कर ।

धुध नही थी रात बावरे,
वो धुए का धुधलापन था,
बम फटने से कतरे-कतरे,
होता वो सुन्दर बचपन था,

फूलो पर जलते रजकण है,
शबनम का दावा न कर ।

आज डर कर रख रहा है,
हर पथिक अपने कदम को,
सहमकर उगते है पौधे,
देखकर माली के ढंग को,

मुश्किल है वापस घर आना,
पर जन का दावा न कर ।

हिंसा छोड़ो, प्रेम करो सब,
दोहराई सब पुरा कथाएं,
आज तरसता है मेरा मन,
सुनने को फिर परी कथाए,

खनक रही प्राचीन बेड़िया,
कगन का दावा न कर ।

• • •

हृदय मेरा इन्सानों में

लहरो को न दोषी कहना,
नियति, समय सब कुछ अपना,
पर डोल रही जीवन की नावें,
मृत्यु के तूफानो मे।

छोड़ दो मतलब के यारो
दोस्ती बदनाम करना,
आज घिरे हैं हम एकाकी,
भीड़ भरे अन्जानो मे।

खाली नही जमी जीवन की,
मैदान मौत का खाली है,
देखा जश्न मनाते हमने,
उनको कब्रिस्तानो मे,

जले शमां जल जाए प्रेमी,
अपना कुछ संबध नही,
परवानों की लाश उठाते,
हम है उन परवानों में।

नही बुरी दुनिया, न कोई,
बुरा यहां अफसाना है,
फिर भी खोज रहा अच्छाई
हृदय मेरा इन्सानो मे।

• • •

पर दाम न लगाओ

प्रेम से लेलो प्रिय,
पर, दाम न लगाओ।

ये मेरे फन का पहलू है,
ये पूरा नही अधूरा है,
हर एक कविता का अक्षर,
सब के भावो का चूरा है,

सिक्के दिखा गरीब को,
न लोभ मे फंसाओ।

अमूल्य नही कहता हू मैं,
सब मुफ्त मे बिकने लायक है,
अभिमान इसे समझो न तुम,
बस मेरा शातिदायक है,

सब जानकारी है मुझे,
तुम और न समझाओ।

नीलाम सभी को होना है,
ये तो नियति का नियम नही,
जो चीज प्रिय हो उसे कभी,
बाधा करते प्रिय स्वयं नहीं,

मुझसे सुबह-सुबह तुम,
इन्कार न कराओ।

एहसान नहीं होगा कोई,
तुम जानो, राह में पाया है,
ये हार किसी के फूलो का,
बस हमने गले लगाया है,

एक बार माग कर के,
तुम छोडकर न जाओ।

• • •

अजनवी अंजान हमसे

आशनाओं का नगर है,
अजनवी, अन्जान हम से।

ताकतें तेरी बडी है,
हौसले मेरे बड़े है,
हार हो या जीत हो ये,
मौत से भी जा लडे है,

डर रहा है आज तक भी,
ये मिटा श्मशान हम से।

हम अकेले मच पर आ,
गीत कुछ तुमको सुनाएं,
दर्द टपकाता फिरे जो,
राग कण्ठो से बहाए,

पर न गाया जा सकेगा,
क्राति का संघ गान हम से।

भूख लगती है तुम्हे जो,
धान खेतों मे उगाओ,
कंठ है प्यासे तो खोदो
कुछ कुएं और नीर पाओ,

बन भिखारी मांगते क्यो,
दे दुआए दान हमसे।

• • •

होती सबकी मजबूरी है

करने को जीवन यापन,
हम कालकूट भी पीते है,
करते है काम यहां जो भी,
होती सबकी मजबूरी है ।

प्रवाहमान है ये श्वासें, सीकर में डूबा यह बदन,
आधी देह तो ढकी हुई, औ आधी है निर्वसन,
कम दे दोगे, कम ले लेंगे, हम सबकी ही मंजूरी है,

अवलम्बित है हम तो तुम पर,
ओ धन के मक्खीचूसो,
अवांछित कर्म कराओ न,
और न ही खून ये चूसो,
सहमे रहते है हम घर मे, तुम से बहुत ही दूरी है ।

प्रगल्भ नही हम हो पाए,
उन्मुक्त उत्कर्ष हो कैसे,
अजहद वैषम्य इसी कारण,
है योगक्षेम भी मुश्किल अब,
गर, बोले ना तो, चिकने घड़े,
बोलें तो बद-शहूरी है ।

समवाय कहां से हो पाए,
दीवार है मजबूत बहुत,
जो तोड़े इनको आकर के,
वो दृश्यमान ना होता है,
है सब ही की, ये अभिलाषा,
पर होती ही ना पूरी है।

करते हैं काम यहां जो भी
होती सबकी मजबूरी है ।

• • •

फिर से चमन लगाएं

इन्सानियत को आओ,
फिर से गले लगाएं,
इन्सान का ये उजड़ा,
फिर से चमन लगाए...

जिस राह पर चलें हम,
मंजिल वही हमारी,
जिस मोड़ पर रुकें हम,
महफिल वही हमारी

कर दूर इस तिमिर को, आओ शमा जलाएं ...

दानी नही बनेंगे,
पर हैं परोपकारी,
बस देश ही नही ये,
दुनिया भी है हमारी,
नारा यही हमारा, सबको यही बताए...

सहयोग से हमारे,
पावन पुनीत कर्म ये,
कर्तव्य को निभाना,
सबसे उचित धर्म ये,

अपना समझ इसे हम, मन से इसे निभाए....

इन्सान हम बनेंगे,
हैवान बन न पाए,
इसका नशा चढ़े बस,
ऐसी हवा चलाए,
अपने किसी शहर को जन्नत तले बसाएं..

• • •

विवाहोत्सव

नफरत की शहनाई बजती,
बदले की ये आग जली है,
आती है बारात दुश्मन की,
हुआ मिलन जो, सबका नाश।

महफिल में है तेज शराब,
पीते ही हो हाल खराब,
जहर मिलाया है साथी ने,
हो पाएगी नहीं तलाश।

माला डाली है बंधन की,
बजी तालियां इस क्रन्दन की,
इस दुनिया में रहने वाला,
बंधन से बच पाता काश।

हुआ सभी कुछ आई विदाई,
बातों की है तेज लड़ाई,
डोली में बैठी जो दुल्हन,
होगी विदाई लेकर लाश।

• • •

हर शख्स यहाँ सेनानी

ये वतन शहीदों का है,
हर शख्स यहां सेनानी,
हो शब या फजर कभी,
तुम मांगो, देंगे कुर्बानी...

मेहमां बनकर आएगा,
मालूम है दुश्मन अपना,
फिर भी इजहार यों करते
ज्यों देख रहे हो सपना,

देते धोखा हम ना पर,
गफलत ही सदा दिखाते,
और फिर गनीम समझे
कि है सारे अज्ञानी ...

हमलावर ना बनते है,
हो लाजिमी तो लड़ते,
हमने सीखा है पुरखो से,
हर सच्चाई पर अड़ते,

दुनिया को सदा सिखाते है.
हम अमन चैन से रहना,
हम इंसानी साजों में से,
छेड़े ~ धुन मस्तानी....

सरहद पर आ कोई बिछाए,
गर, जाल हमें फंसाने,
उनमे मिल हम जश्न मनाते,
दुश्मन को फुसलाने,

वो जान कभी ना पाए कि,
हम महफिल में आए है,
आज भले ही फसे हमारी,
जोखिम में जिन्दगानी ..

• • •

नहीं वक्त है

सहारे नही काम आएंगे दिले,
नहीं वक्त है, ये सहारो का अब,
खिजा ही सदा साथ देगी तेरा,
नही वक्त है, ये बहारों का अब।

किसे याद कर जिन्दगी रो पड़ी,
किसे याद कर मुस्कुराने लगी,
किसे याद कर ये गिलाए जगी,
किसे याद कर गीत गाने लगी,
न हमराज कोई मिलेगा यहां,
नही वक्त है, राजदारो का अब।

है जब तेरे सग तेरा ही काफिला,
तो डरता है क्यूं दिल, जरा कुछ बता,
ये मजिल नहीं दीखती है तो क्या,
तूं भूले भी क्यू राह की इल्तजा,
न मुमकिन नही, मजिले न मिले,
नही वक्त है, रह गुजारो का अब।

ये तूफान है डर रहा क्यूं बता,
है मेहमान दो पल चला जाएगा,
हुआ क्या अगर ऐ मेरे ना खुदा,
तू कर ताअजीम छला जाएगा,
यही सोच मझधार अपना जहा,
नही वक्त है ये किनारो का अब

कफन भी नहीं औ दफन भी नही,
यहा लाश बनकर पडे ही रहो,
नही बारियों का जमाना दिले,
यहा बन कतारे खडे ही रहो,
फैंक आयेगा कोई श्मशान मे,
नही वक्त है ये मजारों का अब।
जो खुद ही खडा रह सके वो रहे,
नही वक्त है बेसहारों का अब।

• • •

हमें चाहिए

नजारों की कोई कमी 'विश्व' ना,
हमें देखने को नजर चाहिए,
खुदा या फरिश्ते की न जुस्त जू,
हमें एक उम्दां बशर चाहिए ।

नहीं आरजू न कोई इल्तजा,
करुंगा बताता हूं पहले खुदा,
नही सरनिगूं तेरे सामने ना खुदा,
नही सैल-सिफत से दहशत शुदा,
यूंही शांत शीतल बही जा रही,
हमें एक तन्हा लहर चाहिए।

शवे हल्ल से मैं हूं घबरा गया,
यह सोचना भी गलत है जहां,
नही ये शमाएं मुझे चाहिए,
नही रोशनी की जरुरत यहां
जहां हो घुधलके से तम का मिलन
हमे एक ऐसी सहर चाहिए ।

खड़े हो के हम चल दिए उस शहर,
मिली जगह बैठने के लिए,
जहां ने यूं ही दार्शनिक कह दिया,
मिली बात न सोचने के लिए,
जहा सब मिले, या अकेले रहें
हमें एक ऐसा दहर चाहिए ।

• • •

अच्छा किया तूं ने

एहसानमंद अब नही,
तेरा दिया अब सब नही,
जो था अनुग्रह कर दिया,
वो ले लिया तूंने,
अच्छा किया नियति
बहुत अच्छा किया तूंने ।

गर अब कहूं बुरा है ये,
क्या फायदा इससे
बदला है कब अच्छाई मे,
कुछ भी यहा किससे,
कहता यही हुआ वही,
जो रच दिया तूंने....

संसार के बंधन से कोई,
छूट ही गया,
सांसो का तार एक पल मे,
टूट ही गया,
जगती के उपकरणों को व्यर्थ,
कर दिया तूंने ...

अनुचित नही, उचित है ये,
सुन्दर सुमन चुना,
पागल – सी भावनाओ की,
ध्वनि को न सुना,
लेता बहुत संसार उससे,
ले लिया तूंने...

मालूम होगा आज कौन,
अपना – पराया है,

है

सहयोग कौन दे रहा,
किसने सताया है,
निज – पर परखने का भला,
मौका दिया तूने....

पर पांव पर चलता रहा,
मैं आज तक जग मे,
देखी नही कठिनाइया,
मैंने कभी मग मे,
मैं सुप्त था जीवित,
अब जगा दिया तूने ...

• • •

उस दिन भी शाम हुई साकी

आकाश मे मन जाने को था,
यमराज लिए आने को था,
दायित्व अधूरे रहे सभी,
पूरे वो शब्द न कहे कभी,

वो भी बेवश संग हम भी थे,
अवदात दुआ मे गम भी थे,
जीवन जीने को इक पल भी
तब नही रह गया था बाकी ..
उस दिन भी सूरज निकला था,
उस दिन भी शाम हुई साकी,

मेरी थी चाह प्रलय होती,
ये धरा सलिल मे लय होती,
सबकी आँखें उपालम्भ भरी
मेरी नजरें बेचैन डरी,,
आगे आते कतराता था,
न जाने क्यो शरमाता था,
औधा लेटा था शैया पर,
जग का करार ले नापा की

कितनी निष्ठुर है नियत – गति,
अविरत चलती ही रहती है,
है कैसी आग चिताओ की,
अनबुझ जलती ही रहती है,

लाखो जीवित मुर्दे लाकर,
इस आग मे डाले जाते हैं
पर उस दिन थे डाले आंसू,
है कसम हमे दिल की, जा की
उस दिन भी सूरज निकला था,
उस दिन भी शाम हुई साकी ।

• • •